अध्याय – प्रथम

1 नेपाल का संक्षिप्त परिचय (सांस्कृतिक एवं सांगीतिक पृष्ठभूमि)

1.1 नेपाल का परिचय

1.2 नेपाल शब्द की उत्पति

1.3 तीनों काल में नेपाल

1.4 नेपाल के तीन प्रदेशों का परिचय

1.5 नेपाल की परिचयात्मक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं संगीत

अध्याय प्रथम: नेपाल का संक्षिप्त परिचय (सांस्कृतिक एवं सांगीतिक पृष्ठभूमि)

नेपाल एक स्वतन्त्र और प्राचीन राष्ट्र है। यह बहु जातीय बहु भाषी एवं बहु सांस्कृतिक स्थल है। नेपाल एशिया महाद्वीप के मध्य भाग में अवस्थित देश है। नेपाल दो विशाल देश चीन एवं भारत के बीच में अवस्थित सार्वभौम राष्ट्र है। क्षेत्रफल के आधार में अत्यंत छोटा हाते हुए भी इसकी भौगोलिक अवस्था, सांस्कृतिक गतिविधियाँ विभिन्न जाति तथा जनजातियों की विशालता की वजह से सम्पूर्ण विश्व में स्वतंत्र रूप से परिचित है। ''नेपाल का कुल क्षेत्रफल 147,181 वर्ग किलोमीटर है। क्षेत्रफल के आधार पर पूर्व से पश्चिम की लंबाई 885 वर्ग किलोमीटर और चौड़ाई उत्तर से दक्षिण तक 193 किलोमीटर है। नेपाल को तीन प्रदेशों मे बाटा गया है हिमाल, पहाड़ और तराई। हिमाली प्रदेश कुल 15%, पहाड़ी प्रदेश कुल 68% और तराई प्रदेश कुल 17% फैला हुआ है।''[1] हिमाली प्रदेश में विश्व की सबसे ऊंची 14 हिम श्रृंखलाओं में से आठ नेपाल में है जिस में विश्व का सर्वोच्च शिखर सगरमाथा एवरेष्ट एक है। नेपाल की राजधानी और सबसे बड़ा नगर काठमांडू है। काठमांडू उपत्यका के अंतर्गत भक्तपुर, मध्यपुर ठिमी, ललितपुर(पाटन), कीर्तिपुर नाम के नगर भी हैं। अन्य प्रमुख नगरों में पूर्व मे विराटनगर, धरान, जनकपुर, हेटौडा और पश्चिम में पोखरा, बिरगंज, महेन्द्रनगर, बुटवल, बिरेन्द्रनगर इत्यादि हैं।

shutterstock.com · 453588196

1.1 नेपाल का परिचय :

नेपाल देश का नाम इतिहास के पन्नों में आदि काल से उल्लेखित पाया गया है। नेपाल देश का उल्लेख सब से पहेले 'अथर्व परिशिष्ट' में किया गया है। इतिहासकारों के अनुसार नेपाल ईसा के 300-600 वर्ष पहेले ही निर्माण हुआ था। प्राचीन धार्मिक ग्रंथ वेद, पुराण, इतिहास इत्यादि मे विविध प्रकार से इसकी चर्चा की गई है। स्कंद पुराण, महाभारत महाकाव्य, रामायण महाकाव्य में नेपाल से संबन्धित प्रचुर मात्रा में उल्लेख मिलता है। बौद्ध वाङ्मय में नेपाली इतिहास से संबन्धित प्रचुर मात्रा में सामाग्री विद्यमान है।

1. राजभण्डारी, सुनिता/ कातीप्याखनय नृसिंह अवतार/ p-2

जातकों में यह ईसा पूर्व तृतीय शताब्दी की सभ्यता अंकित है। कपिलवस्तु जो कपिल मुनि का आश्रम था जो प्राचीन समय में शाक्यों एवं कोलियों की राजधानी के रूप में प्रचलित हुई। जनकपुर के महाराजा जनक और उनकी पुत्री सीता नेपाल की विभूतियाँ थे जिनकी गाथाएँ सभी जगत में प्रचलित है।

छठी शताब्दी ई.पू में आचार्य जैनमित्र द्वारा लिखित 'मुल्सर्वस्तिवादक्नियसंग्रह' में बौद्ध भिक्षुए नेपाल भ्रमण के लिए आए,इस बात का उल्लेख किया गया। चौथी शताब्दी ई.पू में लिखित कौटिल्य के अर्थशास्त्र मे नेपाल का कंबल, पाटली पुत्र के बाजार में मांग की बात का उल्लेख किया गया है। 335 से 375 ईसा में सम्राट गुप्त साम्राज्य के इलाहवाद के स्तंभ अभिलेख में छिमेकी राज्य के रूप में नेपाल का नाम उल्लेख किया गया है। इस बात से नेपाल एक प्राचीन स्वतंत्र राष्ट्र के रूप मे बोध होता है। प्राचीन धार्मिक ग्रंथ स्कंद पुराण के अलावा गरुडपुरान,वराहापुराण इत्यादि पुराणों में पवित्र भूमि के रूप में नेपाल का नाम उल्लेख किया है। प्राचीन ज्योतिषों के ग्रन्थों मे नेपाल की चर्चा एवं नेपाल में होने वाले संक्रमण की भविष्यवाणी की गई है। उक्त ज्योतिष शास्त्र छठी शताब्दी में लिखे गए ऐसा अनुमान किया गया है। "महाभारत के वनपर्व में नेपाल का वर्णन किया गया है। जैन ग्रंथ 'आवश्यक सूत्र' में भी नेपाल के विषय में बताया गया है। तीन सौ शताब्दी ईसापूर्व जैन आचार्य भद्रबहूले ने नेपाल में प्रवेश किया, इस बात का उल्लेख उक्त ग्रंथ में मिलता है। 629 से 645 ई.सं में उत्तरी भारत के भ्रमण क्रम में नेपाल के बारे में सुने हुई बात का विस्तृत वर्णन किया था।"[1]

विश्व के सम्पूर्ण देशों में एक मात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल को जाना जाता है। विशाल हिमालयों के मध्य स्थित राष्ट्र नेपाल प्राचीन काल से ही हिमाली देश, ऋषिमुनियों का तपोभूमि देश, किराती देश इत्यादि नाम से जाना जाता था। प्राचीन धर्म ग्रंथ एवं पौराणिक ग्रन्थों में उल्लेख के अनुसार नेपाल को सतयुग मे सत्यवती, त्रेता युग मे तपोवन, द्वापर युग में मुक्तिसोपान एवं कलियुग में नेपाल कहा जाता है।[2]

1.2 नेपाल शब्द की उत्पत्ति :

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के इतिहासकारों के अनुसार नेपाल शब्द की उत्पत्ति के विषय में विभिन्न मत पाया गया है जो एक विचारशील विषय के रूप मे माना जाता है। नेपाल शब्द के नामकरण से पहले यह शब्द कैसे बना इसको जानना आवश्यक है। नेपाल शब्द का सब से पहले उल्लेख अथर्वपरिशिष्ट में मिलता है। इसके अनुसार नेपाल विशाल हिमालय की गोद में होने के कारण 'निपालय'

1. उपाध्याय, श्रीरामप्रसाद/ नेपालको प्राचीन र मध्यकालीन इतिहास/ p-13, 14
2. पौड्याल, हरिप्रसाद/ शोध प्रबंध- नेपाल के प्रचलित लोकसंगीत में
   वाद्यों की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन/ p- 13,14

शब्द से अपभ्रंश होकर नेपाल हुआ, ऐसी मान्यता है। प्रा.डा. श्रीरामप्रसाद उपाध्याय के अनुसार नेपाल शब्द की उत्पत्ति मुख्य चार आधार पर मानी गयी है-

1.स्थलगत आधार 2.धार्मिक आधार 3.भाषागत आधार 4. जाति के आधार

1.2.1 स्थलगत आधार

स्थलगत आधार अनुसार 'ने' नाम के ऋषि द्वारा इस जगह का पालन किया गया था, इसीलिए इस देश का नाम नेपाल रखा गया। दूसरी ओर कुछ विद्वानों का कहना है कि 'ने' ऋषि नाम का इतिहास के पन्नों में उल्लेख नहीं है इसीलिए इस बात का समर्थन नहीं करते है। डा. जगदीश्चंद्र रेग्मी के अनुसार जिस तरह नेपाल में जगह के अनुसार हिमालों का नाम रखा गया जैसे 'नाङ्पाला' और 'नुप्ल' इसी तरह नेपाल शब्द की उत्पत्ति मानी गयी है।

1.2.2 धार्मिक आधार

विद्वानों ने धार्मिक ग्रंथ के आधार पर भी नेपाल शब्द की उत्पत्ति के विषय मे उल्लेख किया है। हिमवत्खण्ड, पशुपति-पुराण, चतुरक महाभारत नाटक में नेपाल शब्द की उत्पत्ति के विषय में चर्चा की गयी है। हिमवत्खण्ड अनुसार मरीचि ऋषि का पुत्र 'नेमुनी' ने कोई देवी की तपस्या की और उन देवी की आज्ञा अनुसार इस जगह में शासन किया। इसीलिए उनके नाम पर नेपाल शब्द की उत्पत्ति हुई। इस धार्मिक घटना का पशुपतिपुराण और चतुरक महाभारत में भी समर्थन किया है।

आदिकवि वाल्मीकि रचित रामायण जो उन्नीस सौ वर्ष ई.पू. माना गया है, इस काव्य में नेपाल राज्य का वर्णन होना स्वाभाविक रहा है क्योंकि महाराजा जनक और उनकी पुत्री सीता का जन्म नेपाल के जनकपुर मिथिला में हुआ था, जिनका विवाह अयोध्या के नरेश भगवान श्रीरामचन्द्र के साथ हुआ। राजा जनक एवं जानकी के कारण नेपाल की संस्कृति का विवरण इस ग्रंथ में पर्याप्त मात्रा में मिलता है। इस प्रकार नेपाल राज्य को अत्यंत प्राचीन एवं ऐतिहासिक स्थान माना जाता है। इसी प्रकार चौदह ई.पू मे रचित महर्षि वेद व्यास का महाभारत युद्ध जब हुआ था,उस युद्ध के दौरान नेपाल के राजा जीतेष्टि भी सम्मिलित हुए थे इसी कारण उनका विवरण देते समय नेपाली संस्कृति एवं जनजीवन का विशेष रूप से वर्णन किया गया है।

समस्त वैदिक वाङ्मय इतिहास पुराण में प्रचुर मात्रा में उल्लेखित इस राष्ट्र को स्कंदपुरान के हिमवत्खण्ड में अनेक प्रकार से इसकी महिमा की है। इसी प्रकार नेपाल महात्म्य में धर्मा भूमि, स्वर्ग का द्वार, भाग एवं मुक्ति के द्वारा जीवन को सार्थक बनाने वाला देश कहा गया है। इसी प्रकार कौटिल्य के अर्थशास्त्र,

स्कंदपुरान, देवपुराण, रामायण, महाभारत इत्यादि अनेक ग्रंथों में प्रचुर मात्रा में प्रमाण यत्र तत्र रूप में मिलता है। बारहस्पत्य अर्थशास्त्र तथा चंद्रगुप्त कालीन शास्त्रों में नेपाल का वर्णन उल्लेख किया है। नेपाल से आयात किया हुआ ऊनी कपड़े तथा कस्तूरी(हिरण के नाभि में पाया जाने वाली चीज), शिलाजीत, च्यांग्रा आदि का उल्लेख किया गया है।

1.2.3 भाषागत आधार

भाषागत आधार के अंतर्गत तिब्बती, किराति, नेवारी, लेप्चा और संस्कृत भाषाओं में विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। यूरोपियन विद्वान सेसिल वेंडाल के विचार में नेपाल शब्द की उत्पत्ति (तिब्बती भाषा में 'ने' का अर्थ घर और पाल का अर्थ ऊनी है) प्राचीन नेपाल ऊनी व्यापार के लिए प्रसिद्ध था इसीलिए नेपाल 'ऊनी का घर' अर्थात 'नेपाल' नाम से जाना जाता है।

किराती भाषा के अनुसार 'ङयेत' और 'पा' शब्द से 'नेपाल' नाम रखा गया। इस भाषा में ङयेत अर्थात वस्तु और 'पा' अर्थात 'मानिस' यानि वस्तु 'से संबन्धित मानव के रूप में नेपाल का नामकरण हुआ। ङयेतपा का संस्कृत रूप ही नेपाल है। नेवारी भाषा में 'ने' का अर्थ मध्य और 'पा' का अर्थ देश है। इसीलिए पहाड़ और हिमाल के बीच स्थित जगह के आधार पर नेपाल शब्द की उत्पत्ति मानी गयी। नेवारी भाषा में नेपाल को 'नेपा' शब्द से भी पुकारा जाता है। किसी-किसी विद्वानों की मान्यता है कि नेपाल शब्द से ही नेवार जाति का नाम रखा है। ए.ल. बाडेल के अनुसार भोट-वर्मेली भाषा कुल के आधार में 'ने' का अर्थ आवास वा धार्मिक स्थल और 'पाल' का अर्थ निवासी, इस आधार पर धार्मिक स्थल में बसने वाले के रूप मे नेपाल शब्द का प्रयोग हुआ। 'सिल्भन लेभी' ने लेप्चा भाषा के आधार पर नेपाल शब्द की उत्पत्ति मानी है। उक्त भाषानुसार 'ने' का अर्थ पवित्र और 'पाल' का अर्थ गुफा होता है। इस प्रकार पवित्र गुफा के आधार पर नेपाल नाम रखा गया है। और संस्कृत भाषा में 'नीप' का अर्थ उपत्यका और 'आल' का अर्थ है घर। इस के आधार पर नीप और आल मिलकर नेपाल शब्द बना है।

1.2.4 जाति के आधार

नेपाल शब्द की उत्पत्ति विभिन्न जातियों के आधार पर भी की गयी है। काठमांडू उपत्यका के प्राचीन निवासी नेवार जाति से ही नेपाल शब्द की उत्पत्ति हुई ऐसा मानने वाले विद्वानों के विचार में 'न्यार्वा' शब्द से नेवार और नेवार से नेपाल नाम रखा गया है। डा.कमलप्रकाश मल्ल के अनुसार न्यार्वा को अनार्य अभिरजाति का एक समुह माना गया है। दूसरा विद्वान 'श्री ज्ञानमणि नेपाल' के विचार में प्राचीन नीप जातियों के नाम से ही इस देश का नाम नेपाल रखा गया। "जब काठमांडू उपत्यका रहने योग्य हुआ तब दक्षिण दिशा से पशुपालन करके अपना जीवन यापन करने वाले नीप जातियाँ यहाँ पर बसने के लिए आ

गए थे। इसी जाति को गोपाल वंश का शासक के रूप में माना जाता है। इस तरह नीप से 'नेप' और उसमे आल प्रत्यय लगाकर नेपाल शब्द की उत्पत्ति मानी जाती है। इस तर्क को सबसे ज्यादा समर्थन मिला है।"[1]

कुछ विद्वानों के अनुसार नेपाल के राजा महाराजा न्याय के प्रति अत्यंत ईमानदार हुआ करते थे। इसलिए न्याय को निष्ठापूर्वक पालन करने के कारण इसे नेपाल कहा गया। "नेपाल शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम कौटिल्य ने अपने अर्थशात्र मे किया है। उस काल में बिहार में जो मागधी भाषा प्रचलित थी उसमें 'र' का उच्चारण नहीं होता था। सम्राट अशोक के शिलालेखों में राजा के स्थान पर 'लाजा' शब्द व्यवहार हुआ है। अत: सम्भवत: नेपार, नेबार, नेवार इस प्रकार विकास हुआ होगा।"[2]

प्राचीन धर्मग्रंथो में से सबसे पहले ई.पू 800-600 में नेपाल शब्द का उल्लेख किए हुए ग्रंथ 'अथर्ववेद' में नेपाल को कारूप, वीदेह, उदुम्बर, अवन्ती, उज्जैन, कईकेय इत्यादि राज्य के साथ जोड़कर उल्लेख किया है। "कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार नेपाल में अत्यधिक मात्रा में भेड़ बकरी का पालन होता था और ऊन से निर्मित चीजें राजदरबारों में प्रयोग की जाती थी। इसी के नाम से नामकारण हुआ ऐसी मान्यता है।"[3]

1.3 तीनों काल में नेपाल

आदि काल से ही अपनी अलग पहचान बनाने में सफल देश नेपाल का अपना सुनेहरा इतिहास है। स्थापना काल से अनेक शासकों राज्यारोहण, विभिन्न चमत्कारिक घटनाएँ और अपना एक अलग सा पारंपारिक चाल, ढंग से सुसज्जित नेपाल की विश्व में अलग पहचान है। नेपाल के इतिहास के सर्वप्रथम अध्याय यानि ईसा से तीसरी शताब्दी पूर्व प्रामाणिक इतिहास स्पष्ट रूपमें उपलब्ध नहीं है। जितने भी प्रमाण उपलब्ध हैं जनश्रुति, आख्यान, वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र इत्यादि से प्राप्त हैं। प्राचीन काल से हमे यह ज्ञात होता है कि नेपाल का शासनकाल गोपालवंश से आरंभ हुआ है। प्रसिद्ध इतिहासकारों का यह मानना है कि गोपालवंशीय शासकों ने नेपाल में करीब 450 से 500 बर्षों तक शासन किया, उसके बाद महीषपाल राज शासकों ने शासन करना आरंभ किया। यह दोनों शासन काल ई.सं से पहले होने के कारण इतिहासकारों को कोई प्रमाण प्राप्त नहीं हुआ है। परंतु इसके उपरांत जितने भी शासकों

1. उपाध्याय, श्रीरामप्रसाद/ नेपालको प्राचीन र मध्यकालीन इतिहास/ p-11, 12
2. उपाध्याय, श्रीरामप्रसाद/ नेपालको प्राचीन र मध्यकालीन इतिहास/ p-14
3. आचार्य, बाबुराम/ नेपाल को संक्षिप्त वृतांत/ p-8

ने शासन किया उन शासकों एवं उनके राज्यकाल का वर्णन किरात एवं लिच्छवि वंशीय शासन काल में किन्चित मात्रा में प्राप्त होता है।[1]

हिन्दू धर्मावलम्बियों के आधार ग्रंथ वेदों में भी किरात वंश के राजाओं का उल्लेख मिलता है। नेपाल के इतिहास की खोज अनुसंधान के कार्य मे नेपाल के ही अनेक विद्वानों जैसे श्री नवराज पंत, योगी नरहरीनाथ, बलराम आचार्य इत्यादि ने अपना अमूल्य समय देकर अनेकानेक प्रमाण प्राप्त किए है। इसी तरह नेपाल का प्राचीन इतिहास का अध्ययन करने वाले विदेशी भारतीय इतिहाकार विद्वान पंडित भगवान लाल जी का नाम प्राप्त होता है, जो प्राचीनकालिय भाषा संस्कृत एवं गुप्त लिपि में संरक्षित किया हुआ है। लिच्छविकाल में प्राप्त अनेक शिलालेखों में से लगभग 14-15 शिलालेखों को प्रकाशित करने का श्रेय इन्ही विद्वानों को जाता है।

उसके पश्चात विदेशी विद्वान सेसील वोण्डाल, फ्रांस के विद्वान सिलत्यालेभी इत्यादि विद्वानों ने प्राचीन इतिहास को खोजने का कार्य किया है। ‘Nepalese inscriptions in Gupta characters’ को सम्पूर्ण नेपाल अधिराज्य के प्राचीन काल का इतिहास एवं अभिलेखों का अध्ययन स्वरूप प्रमुख साधन माना जाता है।[2]

सम्पूर्ण नेपाल के इतिहास के कालक्रम को तीन भाग में विभाजित किया है:

1) **प्राचीन काल**
2) **मध्यकाल**
3) **आधुनिक काल**

1.3.1 प्राचीन काल

प्राचीन नेपाल का इतिहास ईसा से कई वर्षों पहले आरंभ हुआ जो कि अनेक धार्मिक ग्रन्थों पुराणों में उल्लेख किया गया है। इतिहासकारों के अनुसार प्राचीन काल का समय आदि काल से लिच्छवि काल तक माना गया है। नेपाल राज्य मे सबसे पहले गोपालवंशी द्वारा शासन शुरू हुआ ऐसा माना जाता है। गोपालवंशी महाराजाओं ने 505 वर्षों तक राज्य किया था जिसमें प्रमुख रूप से गोपालवंशी काल के प्रथम राजा भुक्तमान एवं अंतिम राजा यक्ष गुप्त को माना जाता है। प्राचीन काल मे गोपालवंशी राजाओं को ‘नेप’कहा जाता था। इस तरह राज्य स्थापना के साथ ही इस शब्द को राजाओं के साथ जोड़ा गया है।

1. ब्रजाचार्य, धनवज्र/ लिच्छविकाल का अभिलेख नेपाल र एशियाली अध्ययन संस्थान/ p-46
2. प्राचीन काल नेपाल/ p-48

'नेप' जाति के आगमन के विषय में विद्वानों का मत है कि भगवान श्री कृष्ण द्वारिका से नेपाल उपत्यका में आकर जलमग्न उपत्यका से पानी निकालकर रहने योग्य भूमि बनाई थी। उनके साथ गए कुछ गोपालों उपत्यका में ही बसोबास करने लगे। फिर बाद में एक मुनि ने उसी गोपालवंश में से सरदार पुत्र को नेपाल का शासक बनाया था।

गोपालवंशी राजाओं के 505 वर्ष शासन के बाद महीशपाल वंशियों ने युद्ध कर गोपलवंशियों को पराजित करके नेपाल राज्य की सत्ता हासिल किया और लगभग 160-170 वर्षो तक राज्य किया। गोपालवंश के अंतिम राजा यक्ष गुप्त सन्तानहीन होने के कारण मैदानी भाग से आए हुए अहिर(आभीर वा महिषपालों) ने नेपाल उपत्यका में शासन करना शुरू किया। यह जाति सिमरौनगढ और जनकपुर के बीच भू-भाग से उपत्यका में प्रवेश का अनुमान किया गया है। महिषपाल जाति भैंस पालन करने वाले राजपूत वंशी थे। ऐसे अनेकों युग राज्य स्थापना के बाद अनेकों घटनाचक्र, युद्ध, हार, जीत इत्यादी घटना एक सामान्य रूप में चलती रही।

गोपलवंशी और महिषपाल वंशियों के बाद नेपाल को किरात शासकों ने अपने हाथ में ले लिया था। इतिहासकारों के अनुसार किरात काल का आरम्भ राजा यलम्बर से प्रारंभ हुआ था। यलम्बर से आरम्भ होकर लगातार 22 वंशों ने लगभग 1701 वर्ष तक राज्य किया। भगवान गौतमबुद्ध, भारत का मौर्य तथा सुङवंश किरातकाल का समकालीन माना जाता है। इस समय में बाहर से शरणार्थी के रूप में लिच्छवि, कोली, वृजिक, शाक्य, मल्ल आदि जातियाँ नेपाल उपत्यका में प्रवेश की थी। "नेपाल के इतिहास में किरात काल का विशेष रूप से वर्णन मिलता है। किराति राजाओं को धनुर्विद्या और युद्धकला में विशेष रूप से निपुणता हासिल थी।"[1]

किराती शासन के बाद नेपाल में लिच्छवी काल प्रारम्भ होता है। इतिहासकारों के अनुसार आधुनिक भारत के बिहार प्रदेश की राजधानी पटना स्थित मगध साम्राज्य था जिसके नजदीक में वैशाली नाम से प्रसिद्ध अत्यन्त बलशाली लिच्छवीयों का राज्य था। उसी राज्य में मगध के आक्रमण के बाद अपनी हार मानकर उत्तर की ओर भागने के क्रम में नेपाल पहुंचे। धीरे-धीरे यहाँ की भाषा, संस्कृति को अपनाकर किराती राज्य अपने हाथ में ले लिया ऐसा मानना है। नेपाल की राजधानी काठमांडू उपत्यका में प्राप्त ईस्वी संवत् की प्रथम शताब्दी के आसपास पुरातात्विक वस्तु जैसे मूर्तिकला, कांस्य मूर्तियाँ, मिट्टी के वर्तन, कलापूर्ण भवन इत्यादियो से यह पुष्टि होती है कि ई. के प्रथम और द्वितीय शताब्दी में काठमांडू में लिच्छवीयों का अधिकार था और उन्होंने कुशल राज्य संचालन किया। लिच्छवि शासकों में सर्वप्रथम राजा

1. उपाध्याय, श्रीरामप्रसाद/ नेपालको प्राचीन र मध्यकालीन इतिहास/ p-15-17

जयदेव थे। जयदेव के बाद जब मानदेव एवं अंशुवर्मा ने शासन किया तब उनके समय में धर्म, संस्कृति, कला, संगीत इत्यादि गतिविधियों का प्रचार-प्रसार हुआ था। अंशुवर्मा अत्यंत शक्तिशाली मन्त्री थे, जिन्होने कालांतर में पूरा राज्य अपने अधीन किया और स्वयं शासक बन गये थे। इसके पश्चात् ईस्वी के पांचवी शताब्दी में राजा मानदेव का शासन आरम्भ हुआ। इस काल को स्वर्णयुग कहा जाता है, क्योंकि इस समय में राजा मानदेव ने धार्मिक संस्कृतियों का संरक्षण एवं संवर्धन करने का महत्वपूर्ण योगदान किया था। इस समय के चांगुनारायण में अवस्थित राजा मानदेव का अभिलेख सबसे प्राचीन प्रमाणित अभिलेख माना जाता है। इसी काल में "श्री भोगी मुद्रा" भी प्रथम अंकित मुद्रा आरम्भ हुई थी।[1]

लिच्छवि काल में संस्कृत भाषा का प्रयोग होता था, इसलिए इस काल में जगहों के नाम भी संस्कृत में रखा जाता था। इस काल के प्रारम्भिक समय में हिन्दू धर्मावलंबियों के प्रसिद्ध मंदिर पशुपतिनाथ मंदिर का निर्माण हुआ। राजा मानदेव ने सती-प्रथा की कठोरता को तिरस्कार किया था इसीलिए अपने पिता की मृत्यु के समय अपनी माता राज्यवती को सती होने से रोका था। इस काल के समाज में प्रमुख जातियाँ किरात, कोली, मल्ल, वृजिक, लिच्छवि, गुप्त, शाक्य इत्यादि थे। शाक्य जाति बौद्ध धर्मावलम्बी है, इसलिए लिच्छवि काल के प्रारम्भ से पूर्व ही नेपाल में बौद्ध धर्म प्रवेश हो चुका था। इस समय लोग विभिन्न किसिम से मनोरञ्जन करते थे। वे लोग नाच-गान, वाद्य-वादन तथा मल्ल युद्ध तथा गो-युद्ध(सांढ लडाके) मनोरञ्जन करते थे। इस के अलावा शिकार और म्द्ध्यपान करके भी मनोरञ्जन करते थे। वैसे विद्वानों का कहना है कि लिच्छवि काल तक संगीत के बारे में लगभग कुछ भी ज्ञान नहीं है। सातवीं शताब्दी के चीनी ग्रन्थों से संगीत के महत्व की पुष्टि होती है जिसमे उपत्यका के निवासियों द्वारा ढोलक(धीमे) और झांझ बजाने का जिक्र किया गया है।[2] लिच्छवि काल की कई परम्पराओं में से ज्येष्ठ महिना में पुर्णिमा पष्ठी पुजा मनायी जाती थी जो आज के नेवार समाज में सीठीनखः के रूप में मनाने की चलन है। इसलिए इतिहासकारों का मानना है की इसी काल में ज्यादातर प्रमाण उपलब्ध होने के कारण इस काल को प्रामाणिक इतिहास और स्वर्णयुग कहा गया है।

1.3.2 मध्य काल

नेपाल में लिच्छवि काल के बाद 880 से 1768 ई. सं तक के समयावधि को मध्यकाल कहा जाता है। मध्यकाल के प्रारम्भिक समय का विवरण स्पष्ट नहीं है। "कुछ इतिहासकारों के अनुसार 1097 ई.सं में नान्यदेव नामक एक भारतीय राजा ने आक्रमण किया था और उसने नेपाल में एक कर्नाटक वंश की स्थापना की थी। काठमांडू उपत्यका के दक्षिण में तिरहुत स्थान में अपने लिए एक साम्राज्य स्थापना किया

1. ब्रजाचार्य, धनवज्र/ लिच्छविकाल का अभिलेख नेपाल र एशियाली अध्ययन संस्थान/ p-64
2. Widdness, Richard/ Dãphã: Sacred singing in a south Asian city/ p-5

था। संयोगवश वे दक्षिण एशियाई संगीत के इतिहास में भी शामिल है, उन्होने एक संस्कृत संगीत ग्रंथ लिखा था जिसका नाम 'सरस्वतीहृदयलक्षण' या 'भारतभूमि' है, परंतु नान्यदेव द्वारा लिखित संगीत ग्रन्थ का कोई निशान नहीं है।"[1] 12 वीं सदी में ठकुरी वंश के पतन के बाद 13 वीं सदी से 18 वीं सदी तक मल्ल शासको ने शासन किया था। मल्ल जाति नेपाल में प्राचीन समय से ही रहवास करते थे, परंतु शासक का पद प्राप्त नहीं था। इतिहास के मध्यकाल में सर्वप्रथम 'अरी मल्ल' 'ने वि. सं 1257(सन 1200) में अपना राज्य स्थापना किया था। मल्ल कालों में राजा जयस्थिति मल्ल का एक अलग ही पहचान बन गयी थी। उन्होंने अपने राज्यकाल में बहुत-से क्षेत्र में विकास एवं उन्नति की थी। उन्होंने भाषा एवं साहित्य में भी विकास किया था। उस समय संस्कृत भाषा के साथ-साथ नेवारी भाषा को भी समान रूप में प्रयोग किया जाता था। इस जानकारी से हम यह कह सकते है कि नेवार जाति एवं नेवारी भाषा जयस्थिति मल्ल के राज्यकाल से पहले ही शुरू हो चुकी थी। वि.सं 1538 से पूर्व उपत्यका एक ही राज्य में संचालन होता था। उस समय उपत्यका में स्थित भक्तपुर जिला मुख्य केन्द्र बन गया था। उसके बाद यक्ष मल्ल(जयस्थिति मल्ल के पोता) के मृत्यु के बाद उनके पुत्रों में राज्य को बांटकर शासन संचालन शुरू हो गया था। और धीरे-धीरे उपत्यका तीन शहरों में बांट दिया था। काठमांडू, ललितपुर, और भक्तपुर जिसको नेवारी भाषा में यें, यल और खोप कहते है। इन तीनों स्थान में कई मल्ल राजाओं ने शासन किया। इन कई शासकों ने अपने काल में कई विकास के कार्य एवं देश का उत्थान करने के कार्य किए गए।

अब हम साहितिक, कला और संगीत के कुछ उच्च और सर्वोच्च कार्य सम्पन्न करने वाले कुछ मल्ल शासकों की चर्चा करेंगे जो डॉ जनकलाल वैद्य द्वारा लिखित 'नेपाल भाषाया प्राचीन काव्य सिर्जना' पुस्तक से उपलब्ध हुआ है।

जगज्योति मल्ल: जगज्योति मल्ल राजा ई. सं 1615 में भक्तपुर नगर में राज्य करते थे। वह एक उत्कृष्ट विद्वान के साथ-साथ संस्कृत, मैथिली तथा नेवारी भाषा के विद्वान थे। वह एक कुशल गीतकार, नाटककार तथा संगीतकार भी थे। उनके द्वारा लिखे गए नाटक 'हरगौरी बिवाह' और 'कुञ्जविहारी' मल्ल कालों की उत्कृष्ट रचना मानी जाती है। इस कृति के साथ-साथ उनकी 'संङ्गीतसारार्णव' और 'संगीतचन्द्र' कृतियाँ भी उत्कृष्ठ मानी गयी है।

जगतप्रकाश मल्ल: जगतप्रकाश मल्ल भी भक्तपुर नगर के शासक थे, जिन्होंने ई. सं 1643 में शासन किया था। उनके साहित्य और संगीत के प्रति अगाध स्नेह था। उन्होंने अपने उपनाम 'कविन्द्र' की उपाधि भी प्राप्ति की थी। इस तरह संगीत के प्रति अपनी वैशिष्टता दिखाने के लिए 'गंधर्वविधागुरु' उपाधि हासिल

1. Widdness, Richard/ Dãphã: Sacred singing in a south Asian city/ p-14

की थी। बचपन में ही उन्होंने 'नानागीत-संग्रह' नामक गीत-संग्रह की रचना की। इनकी कई कृतियों में से 'गीतावली' और 'पद्समुच्चय' उत्कृस्ट रचना मानी जाती है। वह संस्कृत, मैथिली, नेवारी, हिन्दी और बंगाली भाषाओं के ज्ञाता थे। इसलिए एक अभिलेख में जगतप्रकाश मल्ल राजाओं में श्रेष्ठ, पाण्डित्य का खानी और विद्वानों में अग्रगण्य, ऐसा उल्लेख किया है।

जितामित्र मल्ल : अपने पिता जगतप्रकाश मल्ल की मृत्यु के बाद ई. सं 1672 में जितामित्र मल्ल भक्तपुर नगर का राजा बना था। उनका भी सांगीतिक और साहित्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान रहा है। उन्होने संस्कृत, मैथिली और नेवारी भाषा में विभिन्न कृतियां लिखी। उनके 'मदालसाहरणा', 'गोपीचन्द्र अस्वमेध', 'जैमिनी भारत', गीतगोविन्द' इत्यादि नाटक उत्कृष्ट श्रेणी की रचना माने जाते हैं। एक अभिलेख में उनको असल शास्त्र, संगीत तन्त्र आदि सभी विधाओं में पारंगत राजाओं में शिरोमणि उल्लेख किया है।

भूपतिन्द्र मल्ल : भूपतिन्द्र मल्ल भक्तपुर का राजा थे जिनका शासन काल ई. सं 1696 था। उन्होंने अपने शासन काल में अनेक कला-कृति का विकास और निर्माण का कार्य किया है, जो वर्तमान समय में भी प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। राजा भूपतिन्द्र मल्ल को साहित्य में विशेष रुचि थी। उन्होंने विभिन्न उच्चकोटि के नाटक रचे। नाटक के अलावा उन्होंने गीतमाला, लोकपाल गीत, स्तोत्रादि सङ्ग्रह, नाटकीए गीत संग्रह इत्यादि काव्यों के साथ-साथ कर्मकाण्ड सम्बंधी ग्रन्थों की भी रचना की थी।

रणजित मल्ल : भक्तपुर नगर के अंतिम राजा रणजित मल्ल ने ई. सं 1722 में अपना शासन शुरू किया था। वह भी साहित्यिक प्रेमी राजा थे। उन्होने संस्कृत, मैथिली और नेवारी भाषा में साहित्यिक कृतियों की रचना की। अपने राज्य काल के अंत समय में उपत्यका छोड़कर काशी तरफ प्रस्थान करने के समय उनके द्वारा रचित नेवारी विरह गीत अत्यन्त हृदयस्पर्शी माना गया है।

सिद्धिनरसिंह मल्ल : सिद्धिनरसिंह मल्ल ललितपुर(पाटन) का राजा थे। उनका शासन काल ई. सं 1618 था। वह साहित्य प्रेमी राजा थे। संस्कृत और मैथिली भाषाका विद्वान राजा सिद्धिनरसिंह मल्ल ने मैथिली भाषा में भी बहुत से भक्ति गीत लिखे। वह नाटककार तथा गीतकार भी थे। उनके राज्य काल में 'हरिश्चन्द्र नृत्य' नामक मैथिली भाषा में लिखित नाटक का मञ्चन(प्रदर्शन) करवाए थे। उनके राज्य काल में शुरू किए गए 'कार्तिक नाच' नेवारी समुदाय में वर्तमान समय में भी पाटन में हरेक वर्ष कार्तिक माह में प्रस्तुत किया जाता है, जिसमे नेवारी वाद्य-वादन, गायन का भरपूर प्रयोग किया जाता है।

श्रीनिवास मल्ल : श्रीनिवास मल्ल सिद्धिनरसिंह मल्ल के पुत्र थे। श्रीनिवास मल्ल का शासन काल ई. सं 1660 से था। उनको साहित्य और संगीत के प्रति विशेष रूचि थी। उन्होने बहुत से नाटक भी लिखे है। जिनमे से नेवारी भाषा में लिखे गए 'दश अवतार' और 'बालथक' प्रहसन विशेष उल्लेखनीए हैं। उनको

नाटक लिखना और उसका मञ्चन करना पसंद था। उनके द्वारा लिखित 'दश अवतार' नाटक सङ्ग्रह अभिलेख ग्रंथ में अधिकतर कवितामय, गीति मुक्तक रचनाओं को समावेश किया गया है। पाटन के स्थानीय भजनग्रन्थों में उनके गीत, स्तुति गीत और उपदेशात्मक गीत उपलब्ध हैं। उन्होंने नेवारी भाषा के साथ-साथ संस्कृत तथा मैथिली भाषा में भी स्तुतिगान रचना की है। श्रीनिवास मल्ल स्वयं विद्वान थे, इसलिए वह दूसरे विद्वानो को भी सम्मान करते थे। वे अपने राजदरबार में कला प्रेमी विद्वानों को सम्मानित करते थे।

प्रताप मल्ल : प्रताप मल्ल काठमांडू के राजा थे। उन्होने ई. सं 1641 में अपना राज शासन शुरू किया था। वह साहित्य और संगीतप्रेमी राजा थे। विभिन्न अभिलेखों में उनको कवीन्द्र अर्थात श्रेष्ठ कवि के रूप में लिखा गया। इनके साथ-साथ वे सम्पूर्ण शास्त्र, संगीत विधा में भी पारंगत थे। उनके काव्यों में शृंगार तथा भक्ति रस की प्रधानता होती है। प्रताप मल्ल द्वारा लिखित 'कालिकष्टक स्तोत्र' संस्कृत भाषा में लिखे गए छन्दोबद्ध काव्यात्मक कृति मानी जाती है। वे संगीत तथा काव्य के साथ-साथ नृत्यकला में भी पारंगत थे। उन्होने कालिकावचनम, सर्वापराधस्त्रोत, देवताविमर्श स्तुति और गुह्येश्वरी सम्बंधित ग्रन्थों की रचना की थी जिससे उनकी विद्वत्ता का परिचय मिलता है।[(1)]

इस प्रकार मल्ल काल में केवल जनता ही कला, साहित्य, संगीत में रुचि नहीं रखते थे बल्कि दरबार के राजाओं और रानियां भी विभिन्न साहित्य, कला, संगीत में उतना ही संलग्न हो कर अपनी संस्कृति, कला को मजबूत बनाने में सक्षम थे। मल्ल काल के मध्य समय तक साहित्य, भाषा में ज्यादातर संस्कृत और नेवारी भाषा का प्रयोग पाया गया परंतु उसके बाद भाषा में मिश्रण पाया गया। मल्ल काल में उपत्यका के सभी शहरों में हिन्दू ही थे परंतु विभिन्न समय काल में युद्ध के कारण, अन्य राज्यों से प्रवेश किए हुए जैसे बौद्ध भिक्षुओं, भारत में इस्लामी उत्पीड़न से भागने वाले विद्वान और मिथिला के राजवंश के हिन्दू शासकों ने उपत्यका में शरण ली। बाद में मल्ल वंश में अन्य धर्मों ने शादी की, उसके बाद धीरे-धीरे अन्य धर्मों का मिश्रण होने लगा, और अन्य भाषा को भी महत्व दिया जाने लगा। संस्कृत, नेवारी भाषा के साथ-साथ हिन्दी, मैथिली को भी प्रयोग में लाया गया। "इस समय के बाद से शुरू की गई पूर्वी भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं में से एक 'चर्या' गानों और नृत्य का चलन था। उसको बौद्ध धर्मावलम्बियों ने स्थापीत किया था जो आज भी निरंतर पाया जाता है।"[(2)]

मल्ल समय में देश की रूपरेखा में परिवर्तन हुआ, विभिन्न कला-संस्कृति में बढ़ोतरी, विकास निर्माण का कार्य, भक्तपुर के शासक(ई. सं 1382-95) जयस्थिति मल्ल ने जाति व्यवस्था और कानून संहिता की

1. उपाध्याय, श्रीरामप्रसाद/ नेपालको प्राचीन र मध्यकालीन इतिहास/ p-140-243
2. Widdness, Richard/ Dãphã: Sacred singing in a south Asian city/ p-14

स्थापना की थी परंतु लिच्छवि काल के प्रमाणों के आधार पर जाति व्यवस्था लिच्छवि काल से शुरू मानी गयी है। मल्ल राजाओं ने नगर विकास के लिए संगठनों की स्थापना की, विभिन्न मंदिरों का निर्माण किया, भव्य दरबार बनवाए, कला क्षेत्र के अंतर्गत संगीतकला, वाद्य वादन, चित्रकला, मूर्तिकला, काष्ठकला, धातुकर्मियों, नाटक, लेखन और मंचन आदि कार्य के लिए प्रोत्साहन किया। देश में आए हुए पंडितों, विद्वानों तथा तपस्वियों का स्वागत किया जाता था। विभिन्न धार्मिक परम्पराएं, जात्रा, पर्वों, मेला इत्यादि की शुरुवात की गई। विभिन्न जात्रा, पर्वों में नेवारी संगीत, वाद्य वादन के प्रयोग को प्राथमिकता देने लगे। इन्ही की वंशावली के कार्यकाल में नेपाल की कला, साहित्य, धर्म, सांस्कृतिक गतिविधि, संगीत इत्यादि का बहुत बिकास हुआ, जो नेपाल राष्ट्र की अत्यन्त महत्वपूर्ण सम्पत्ति के रूप में जाना जाता है। मल्ल वंशीय राजाओं का कार्य केवल देश विकास का कार्य और अपनी सीमाएँ बढ़ाना ही नहीं था बल्कि जनता के प्रति सहृदयी भावना एवं उनकी अवश्यकताओं पर ध्यान आकर्षित करने का कार्य भी किया गया।

मल्ल काल में नेपाल महामण्डल के रूप में और जिसका प्रभाव पूर्व में सप्तकोशी, पश्चिम में सप्तगण्डकी, गोरखा, पाल्पा उत्तर में नीलकण्ठ पहाड़ (तिब्बत सीमा), दक्षिण में मिथिला क्षेत्र तक रहा। प्रारम्भिक समय में अत्यंत मजबूत शासन, समय के अंतराल के बाद आंतरिक संबंध ढीले होने लगे और इस के कारण देश को विभाजित होना पड़ा। कर्णाली भाग बाइस (22) एवं गण्डकी भाग चौबीस (24) में विभाजित हुआ। काठमांडू उपत्यका भी यक्ष मल्ल के कार्यकाल में तीन भाग काठमांडू, ललितपुर और भक्तपुर में विभाजित हुआ था। उनका भारत के राजा हर्षवर्धन एवं तिब्बत के राजा गोम्पोले के साथ अच्छा सम्बन्ध रहा। तिब्बत के राजा के साथ उन्होंने अपनी राजकुमारी भृकुटी का विवाह करके सम्बन्ध को और भी मजबूत किया। इस प्रकार राष्ट्र के प्रति सद्भावना, प्रेम एवं प्रजा के प्रति उदार भावना रखने वाले शासक यक्ष मल्ल की मृत्यु के बाद राज्य व्यवस्थापन में उलट-पुलट हुआ और राज्य 'गुप्त वंश' के हाथ में चला गया। यह शासन अधिक चल न पाया और राजा नरेन्द्रदेव ने तिब्बती राजाओं का सहयोग लेकर युद्ध करके पुनः राज्य अपने हाथ में ले लिया। उसके बाद उन्होंने राज्य सम्हाल कर अनेकों व्यापारिक सुधार, विभिन्न राजदरबारों का निर्माण किया। सम्भवतः इन्ही के समय से दरबार का नाम सिंह दरबार रखा गया। समय के अंतराल के साथ धीरे-धीरे मल्ल शासकों मे द्वन्द और भाई-भाई के बीच मेल मिलाप कम होने लगा, धीरे-धीरे राज्य के छोटे-छोटे टुकड़े होने लगे जिसका लाभ 18वी शताब्दी में शाह वंशो ने ले लिया और मल्ल राजाओं ने अपनी हार स्वीकार करके शाह वंश को राज्य सौंप दिया।

1.3.3 आधुनिक काल

प्राचीन काल से लेकर, गोपालवंश, महीशपालवंश, किरातकाल, लिच्छविकाल और अन्त में मल्ल काल के शासन काल के बाद नेपाल में आधुनिक काल का आरम्भ हुआ है। 17वीं सदी के अन्त में तथा 18वीं

सदी के प्रारम्भ में नेपाल राज्य विभिन्न छोटे छोटे भागों में विभाजित होकर और उपत्यका भी तीन भाग में विभाजित होकर एक ही वंश द्वारा राज्य संचालन हो रहा था। युद्ध करकर एक दूसरे को छोटा दिखाना और खींचातानी का माहौल बन गया था। उसी समय गोरखा राज्य के शासक पृथ्वीनारायण शाह ने 18वीं सदी के ई. सं 1768(वि. सं 1825) में काठमांडू उपत्यका में आक्रमण करके विजय प्राप्त की थी। उपत्यका पर विजय के पश्चात उन्होंने धीरे-धीरे नेपाल के अन्य भागों में भी अपना आधिपत्य जमाया था। फिर बाद में उनके वंशजों ने धीरे-धीरे सम्पूर्ण नेपाल के भू-भाग पर कब्जा करके नेपाल को एकीकरण करने का कार्य किया। पृथ्वीनारायण शाह ने काठमांडू उपत्यका काठमांडू, ललितपुर, भक्तपुर राज्य में आधिपत्य जमाने के बाद काठमांडू को अपना निवासस्थान बनाया और इसी को नेपाल की राजधानी घोषित किया। सम्पूर्ण नेपाल का एकीकरण करने के लिए उन्होंने अपनी चतुर बुद्धि एवं दृढ़ संकल्प से कार्य को आगे बढ़ाया था।

पूर्व शासक लिच्छवि एवं मल्ल राजाओं की तुलना में पृथ्वीनारायण शाह भी अपने आप में साहित्य, कला एवं संगीत प्रेमी थे। वे समय-समय पर अपने राजदरबार में नियमित रूप से भारतीय कलाकारों तथा अन्य संगीतज्ञों के संगीत समारोहों का आयोजन करते थे। उनके राज्यकाल में स्वदेशी कला संस्कृति को दबाया नहीं था, बल्कि उनको उच्च शिखर पर पाहूँचाया। अपने द्वारा बनाए गए साम्राज्य की सांस्कृतिक पहचान और राजनीतिक स्वायतता को बनाए रखने के लिए वे प्रयासरत थे। मल्ल काल से रखा गया भारतीय मुस्लिम शास्त्रीय संगीतकारों को वापस भारत भेजा गया था।[(1)] उनके दिव्योपदेश में "वैदेशिक परम्परा एवं संस्कृति के बदले में नेपाल का नेवारी संगीत, नृत्य का प्रचार प्रसार में अपनी भूमिका दिखाएँ" यह स्पष्ट रूप में उल्लेख है। इस काल में कला साहित्य नृत्य के साथ-साथ विभिन्न लोक नाटकों का भी मंचन हुआ।

इसके बाद नेपाल में राणा शासन शुरू हुआ। शाह शासन की निरन्तरता थी परंतु 1846-1951 ई. सं तक एक सदी से अधिक की अवधि के लिए निरंकुश सत्ता प्रभावी रूप से नेपाल के प्रधानमंत्रियों राणा के हाथों में चली गयी। जिसके बाद नेपाल की सीमाओं को बंद कर दिया गया था लेकिन विदेशी राजनितिज्ञों की संख्या छोटी थी, 1816 ई. सं से एक ब्रिटिश निवासी था, लेकिन नेपाल ब्रिटिश भारत में अवशोषित नहीं था। जनता को अपनी भावनाएं, कला प्रदर्शन से वंचित किया गया। नेवारों को शिक्षित होने या सेना में शामिल होने की अनुमति नहीं थी। हिन्दू धर्म को ज्यादा महत्व दिया गया। प्रिंट में नेवारी भाषा का प्रसार निषिद्ध कर दिया। संचार माध्यम जैसे रेडियो, फिल्म पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। जनता को दमन किया गया था। जनता विभिन्न रोगों से पीड़ित हो गयी थी। नेवारी समाज खंडित,

1. Widdness, Richard/ Dãphã: Sacred singing in a south Asian city/ p-7

आत्मनिर्भर और गुप्त हो गया। ऐसे समय स्वदेशी कला संस्कृति और संगीत की जगह भारतीय शास्त्रीय संगीत को दरबार में सम्मिलित करने लगे। राणा के निरंकुश शासन के बावजूद भी मल्ल, जो अनेक प्रकार से समृद्ध नेवार जाति अपनी सांस्कृतिक गतिविधियों को निरंतरता देने में सक्षम हुए। जिसका प्रभाव वर्तमान समय तक भी देखने को मिलता है। नेवारी जाति का संगठन और एकता की मजबुती बरकरार रही है। इस समय की उपलब्धि देखा जाए तो सती-प्रथा को बंद करवाया गया और महाराजा चन्द्र शमशेर ने दास-दासी प्रथा एवं मानव तस्करी की परम्परा का अन्त किया।

ई. सं 1951 में निरंकुश राणा शासन से मुक्त होने के बाद राजा महेन्द्र वीर विक्रम शाह ने लोकतन्त्र को लंबे समय तक नहीं चलने दिया। 1960 ई. सं में राजा महेन्द्र ने सरकार और राजनीतिक दलों के स्थान पर स्थानीय समितियों(पंचायत) की स्थापना की। 1950 के दशक में संचार माध्यम रेडियो और फिल्म के आगमन ने नेवारी संगीत को व्यापक दर्शकों तक पहुंचाने में सक्षम बनाया लेकिन सभी मीडिया में सरकार को ज्यादा महत्व दिया गया। अन्य राष्ट्रीय भाषा को एक सप्ताह में केवल एक ही बार वह भी मात्र आधा घण्टा के लिए प्रसारण किया जाता था। नेवारी सांगीतिक गतिविधियों के संचार हेतू मल्ल काल में स्थापित 'गूठी' की सम्पत्ति को विघटन किया गया था। 1991 ई. सं की दूसरी क्रांति तक निरंकुश शासन जारी रहा जिस के बाद नेपाल में बहुदलीय लोकतन्त्र राज्य की स्थापना हुई। उसके बाद फिर से लोकतन्त्र दबाब में आ गया और 1997 ई. सं से माओवादी गुट की ओर से पूरे दस साल के लिए एक कड़वा गृहयुद्ध हुआ। इसी दौरान वातावरण त्रासमय हो गया था जिसका प्रभाव नेवारी सांस्कृतिक गतिविधियों और नेवारी जनजीवन में भी पड़ा था।

फिर 2001 ई. सं में शाह राजपरिवार का नरसंघार हुआ जिसके बाद नेपाल का अंतिम राजा ज्ञानेन्द्र शाह हुये थे। उनहोंने भी 2002 ई. सं में फिर से समग्र शक्ति ले कर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को दबा दिया। राजशाही के उन्मूलन और गणतन्त्र की स्थापना की मांग 2008 ई. सं में अपरिवर्तनीय हो गई। इस के बाद नेपाल में शाह वंश का शासन पूर्ण रूप से खत्म हो गया और 2008 ई. सं के बाद नेपाल में गणतन्त्र सरकार शुरू हुई।(1) वर्तमान समय नेपाल आधुनिकिकरण, शहरीकरण और पश्चिमीकरण में तीब्र रूप में आगे बढ रहा है। जिसके साथ साथ विभिन्न जनजातियों की कला, साहित्य, सांगीतिक गतिविधियों, भाषा के संरक्षण एवं संवर्द्धन के कार्यों मे मदद मिली है। इन विभिन्न जनजातियों में से नेवारी सांस्कृतिक परंपरा एवं गतिविधियाँ नेवारी समाज में वर्तमान समय तक कम-ज्यादा जीवित हैं, जो सम्पूर्ण नेपाल की आन बान शान बढ़ाने में सफल है।

1. Widdness, Richard/ Dãphã: Sacred singing in a south Asian city/ p-8

1.4 नेपाल के तीन प्रदेशों का परिचय

नेपाल के विशाल इतिहास की चर्चा के बाद उसके भौगोलिक विविधता, रहन-सहन, भाषाएँ, विभिन्न जाति तथा जातीय समूह के वासस्थान प्रदेशों के बारे में चर्चा करेंगे। नेपाल विभिन्न जातियों और जातीय समूहों से भरा हुआ बगीचा है जिसमें कई प्रकार की भाषा बोली जाती है। ई. सं 2011 के जनगणना के अनुसार नेपाल में 100 जातियाँ तथा जातीय समूह पाए गये है। जिसमें विभिन्न इंडो-आर्यन और टीबेटो-बर्मन भाषाएँ बोली जाती हैं। कुल जनसंख्या का 80 प्रतिशत से अधिक विभिन्न इंडो-आर्यन भाषाओं के बोलने वाले हैं जबकि बड़ी संख्या में भाषाएँ टीबेटो-बर्मन परिवार की हैं। नृवंशविज्ञान (Ethnologies) ई. सं 2012 के अनुसार 123 भाषाओं में से 86 भाषाएं टीबेटों-बर्मन से है और 29 इंडो-आर्यन से बाकी अन्य भाषाओं से मानी गई है। भाषा के बाद अगर हम सभी जातियों का बासस्थान के बारे में चर्चा करे तो नेपाल को तीन भागों में बांटा गया है। इन्ही तीनों प्रदेशों में अलग-अलग परम्पराओं से सभी जातियाँ निवास करती हैं। विश्व के मानचित्र में नेपाल को भौगोलिक आधार पर देखा जाए तो सम्पूर्ण विश्व के अन्य देश की गणना के अनुसार क्षेत्रफल में 90 वें स्थान में आता है। क्षेत्रफल के हिसाब से अत्यंत छोटा होते हुए भी यह प्रकृतिक एवं सांस्कृतिक विविधता से परिपूर्ण राष्ट्र है। भौगोलिक रूप से इसको तीन भाग में विभाजन किया गया है :

1) **हिमाल**
2) **पहाड़**
3) **तराई**

1.4.1 हिमाल

नेपाल के तीनों प्रदेश में से सबसे उंचा भाग हिमाल प्रदेश है। कुल क्षेत्रफल में से 15% हिमाली क्षेत्र है। हिमाल प्रदेश के ज़्यादातर भाग बर्फ से ढका हुआ है। इस प्रदेश में विश्व के ही सबसे ज्यादा उंचा विशाल हिमशृंखलाओं में से एक सगरमाथा स्थित है जिसकी उचाई 4848 फीट है। इसके अलावा नेपाल के पूर्व

में स्थित मेची से लेकर पश्चिम महाकाली तक फैले हुए अन्य हिमशिखर जैसे अन्नपूर्णा, धौलागिरी, महालंगूर, लाङटाङ, कुम्भकर्ण, गौरा, पर्वता इत्यादि है। ठंडी मौसम के कारण इस क्षेत्र में मानव बस्ती अत्यन्त नगण्य रूप में पायी जाती है। इस प्रदेश में रहने वाली जातियों का नाम है तामाङ्ग, राई, शेर्पा, गुरुङ्ग, थकाली, लोमी, हिमाली आदि। इस क्षेत्र की आर्थिक गतिविधि सीमित है। कृषि के लिए उपयुक्त जमीन ना होने के कारण इस क्षेत्र का मुख्य व्यवसाय पशुपालन जैसे याक, भेडा, च्याङ्ग्रा(भेड की प्रजाति), घोड़ा और जड़ीबूटी व्यवसाय, पर्यटन व्यवसाय मुख्य है। यहाँ के लोग गर्मी के मौसम में हिमालय के निचले भाग से शिलाजीत, चँवर इत्यादि संकलन करते हैं और संकलन करके पुनः अपने यथास्थान आते हैं।

1.4.2 पहाड़ क्षेत्र

पहाड़ क्षेत्र नेपाल का मध्य भाग है। यह भाग उपर हिमाली भाग और नीचे समथल तराई के मध्य भाग में स्थित है। यह क्षेत्र देश के कुल क्षेत्रफल में से 68% फैला हुआ है। नेपाल की राजधानी काठमांडू पहाड़ क्षेत्र में ही है। इस क्षेत्र में ज्यादा तर मौसम न ज्यादा गर्मी और न ज्यादा ठंडी होती है। दूसरे क्षेत्र में से ज्यादा घना मानव बस्ती पहाड़ क्षेत्र में पायी जाती है। घना मानव बस्तियों में विभिन्न जनजाति तथा आदिवासियों निवास करते हैं, जैसे ब्राम्हण, क्षेत्रीय, मगर, गुरुङ्ग, नेवार, कामी, दमाई, राई, ठकुरी, लिम्बू, कुमाल, दनुवार, सुनवार, चेपङ्ग आदि। इस प्रदेश में हिमाली क्षेत्र से आए हुए मंगोल जाति और तराई प्रदेश से आए हुए आर्य जाति और पहाड़ी प्रदेश में रहने वाले आदिवासी जातियाँ मिश्रित रहते है। इस क्षेत्र का मुख्य पेशा कृषि और पशुपालन है। इस क्षेत्र के ऊपरी भाग में प्रचुर मात्रा में विभिन्न आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों से भरपूर वनस्पति और विभिन्न प्रकार के जंगली जानवरों का निवास स्थान है।

1.4.3 तराई क्षेत्र

नेपाल का तीसरा प्रदेश तराई क्षेत्र है जिसमे ज्यादातर जमीन सम्थल है। इस क्षेत्र में नेपाल का कुल क्षेत्रफल मे से 17% भाग में फैला हुआ है। इस क्षेत्र के उत्तर तरफ पहाड़ी क्षेत्र और दक्षिण का सम्पूर्ण भाग भारत सीमा से जुड़ा हुआ है। नेपाल छोटा देश होने के बावजूद भी यहाँ अत्यन्त ठण्ड से लेकर अत्यन्त उष्ण वातावरण की विविधता पायी जाती है। तराई में ज्यादातर तापक्रम गर्मी और समतल भूमि के वजह से अन्न बाली की खेती प्रचुर मात्रा में होती है। तराई क्षेत्र से ही सम्पूर्ण खाद्य वस्तु पहाड क्षेत्र में निर्यात होता है। इस क्षेत्र का मुख्य पेशा खेती है और उसके साथ-साथ व्यापार व्यवसाय, उद्योग भी है। समथल तराई क्षेत्र में पहाडी क्षेत्र से और छिमेकी राष्ट्र भारत से प्रवेश करने वाली जातियाँ भी रहवास करती हैं। इसलिय यहा का रहन-सहन, खान-पान, भाषा- बोली, वेश-भूषा इत्यादि में अत्यन्त विविधता

देखने को मिलती है। विभिन्न जातियाँ जैसे थारु, यादव, राजवंशी, ब्राह्मण, यादव, तेली, कुशवाहा, चामर, कुर्मी, सुडी, कलवर, मुसहाहर, बानिया, केषत, राजपूत, हलवाई, मारवाड़ी, धीमाल, शिख, बंगाली, मुस्लिम आदि इस तराई क्षेत्र में निवास करते हैं।(1)

1.5 नेपाल की परिचयात्मक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं संगीत

किसी भी देश की पहचान ही उस देश की संस्कृति होती है। संस्कृति का सीधा सम्बन्ध उस देश के लोगों से होता है, जिससे सम्पूर्ण जीवनशैलियों को एक निश्चित राह पर मार्गदर्शन करते है। इसलिए संस्कृति मनुष्य के जीवन की सबसे बढ़ी वास्तविकता है। किसी समाज, देश काल के विकास क्रम को जानने के लिए उस स्थान की संस्कृति ही मुख्य पहलू है। संस्कृति शब्द मानवद्वारा निर्मित मानवीय स्वभाव के दिग्दर्शन का बोध है। "द वर्ल्ड बुक इनसाइक्लोपीडिया" ने संस्कृत परिभाषा में कहा है कि "विस्तृत दृष्टिकोण से देखा जाए तो संस्कृति सम्पूर्ण मानवीय विशिष्ट क्रियाकलाप और मानव की एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी को दिए गए दैनिक जीवन और विभिन्न क्षेत्रों में दिए गए उपलब्धियों को दर्शाता है। इसलिए संस्कृति के अंतर्गत भाषा का प्रयोग, विवाह, बालक का पालनपोषण, जीविकोपार्जन, शासनव्यावस्था, युद्ध, धार्मिक कार्यों की संलग्नता जैसे सम्पूर्ण क्रियाकलापों का समावेश होता है। संस्कृति को जीवन जीने का एक तरीका मान सकते है जो शताब्दियों से इकट्ठा होकर समाज में व्याप्त रहता है जिसमे हम जन्म लेते हैं, हम जो भी समाज में रहकर कार्य करते हैं वही क्रियाकलाप संस्कृति में झलकता है। संस्कृति हमारी सभ्याता की परिचायक भी है।

इतिहासकारों के अनुसार ईसा पूर्व 300-600 के लगभग से नेपाल देश का निर्माण बताया गया है। उसी समय से नेपाल भूमि में विभिन्न जातिय जनमानस जैसे ब्राह्मण, क्षेत्रीय, वैश्य, शूद्र, आदिवासी, किरात, नेवार, तामाङ, मगर, राजवंशी, थारु, कामी, सार्की, दमाई इत्यादि का निवास रहा है। इन्ही जातीय जनमानस द्वारा ही अनेकों समय को पार करते हुए अपनी कला-संस्कृति, संगीत, त्यौहार, पर्वों, रहन-सहन, बोली भाषा इत्यादि वर्तमान समय तक निरंतरता देने में सफल हुआ है जो सम्पूर्ण नेपाल का परिचय है।

भौगोलिक दृष्टि के आधार पर नेपाल को तीन प्रदेश में बांटा गया है- हिमाल, पहाड़ और तराई। इन प्रदेशों में विभिन्न जातियाँ निवास करते हैं जिनका अपना-अपना रहन-सहन, बोली भाषा, चाडपर्व, वेशभूषाएँ, सांगीतिक परिचय,अपना मजबूत संस्कृति है। इसलिए नेपाल को चार वर्ण और 36 जतियों का फुलबारी(बगीचा) कहा गया है। वैदिक काल से ही नेपाली समाज मूलत: हिन्दू वर्ण व्यवस्था पर आधारित

1. Bandhu, C. M./ Aspects of Nepalese Folk Love/ p-16

समाज है। जाति व्यवस्था की परिभाषा स्वरूप यह कहा गया है की उपनयन धारण करने वाले ब्राह्मण, क्षेत्री एवं ठकुरी जाति के समाज मे आते हैं। "ब्राह्मण(बाहुन) दो प्रकार के हैं, कुमाऊँ एवं द्रविडियन जो आधुनिक भारत के (कुमाऊँ)गढ़वाल उत्तरांचल एवं हिमांचल क्षेत्र से नेपाल में प्रवेश किये गए। दूसरे द्रविडियन ब्राह्मण दक्षिण भारत से नेपाल में आये और अपना समाज स्थापित किया ऐसा इतिहासकारों का कहना है।"(1)

नेपाल के पूर्व मेची से पश्चिम महाकाली क्षेत्र में विभिन्न जातियाँ रहते हैं। इन्ही विभिन्न जतियों में से मुख्य स्थान की मुख्य संस्कृति एवं संगीत के बारे में चर्चा करते है।

1.5.1 हिमाली क्षेत्र की संस्कृति एवं संगीत

नेपाल के सबसे ऊंचे स्थानों में हिमाली प्रदेश है जहाँ लगभग वर्ष के पूरे 12 महीने बर्फ रहती है। यहाँ का रहन सहन अत्यन्त भिन्न प्रकार का होता है। हिमाली प्रदेश में मुख्यत: शेर्पा, लामा, तामाङ, भोटे, थकाली, ल्होपा, मार्फाली, मनोङ इत्यादि जातियाँ निवास करती है। प्राचीन काल से ही इस स्थान के लोगों का अलग अलग संस्कृति, रीतिरिवाज, लोकसंगीत, वाद्य वादन, नृत्य, त्यौहार इत्यादि की विशेष पहचान है।

1.5.1.1 तामाङ जाति का संगीत

हिमाली प्रदेश में तामाङ जाति का अपना विशेष स्थान पाया जाता है। इस जाति की उत्पत्ति के विषय में रोचक पौराणिक कथन है। उक्त कथन के अनुसार तामाङ लोग अपने आप को भगवान ब्रम्हा विष्णु और महेश्वर त्रिदेव की संतान मानते है और जर्ज एन- रोरिक अनुसंधानकर्ता के अनुसार तामाङ का अर्थ 'घोडचढी सैन्य' बताया गया है। दूसरे शोधक के अनुसार तिब्बती राजा स्रोङ्गचोन गम्पो ने जब नेपाल में आक्रमण किया था तब उनके साथ आए कुछ लोग नेपाल में ही बसोबास करके घोड़चढी फौज के नाम से प्रचलित हो गए थे। परंतु इस बात का उल्लेख तामाङ लोग के वंशावली में प्राप्त नहीं होने से कुछ शोधक इन्हें नेपाल के ही आदिम निवासी मानते है। तामाङ का अर्थ, ता अर्थात घोड़ा और माङ का अर्थ व्यापार है। इस आधार पर तामाङ लोग घोड़चढी ना होकर घोड़ों के व्यापारी समझ सकते है। "वि. सं 2058 वर्ष के राष्ट्रीय जनगणना के अनुसार पुरे राज्यभर में तामाङ की कुल जनसंख्या 12,78,468 थी। यह जाति हिमाली प्रदेश के साथ साथ पहाड़ी प्रदेश के शिवपुरी, मणिचूर, नगरकोट, फूलचोकी, चंद्रागिरी,

1. पौड्याल, हरिप्रसाद/ शोध प्रबंध- नेपाल के प्रचलित लोकसंगीत में वाद्यों की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन/ p-42

पाँचमाने इत्यादि स्थानों में भी निवास करती है।"[1] इस जाति का मुख्य पेशा खेती और मजदूरी है। इस जाति में विभिन्न संस्कृति परम्परा जैसे- 'न्वारन'(शिशु की नामकरण), विवाह, व्रतबंधन इत्यादि का प्रचलन है। इन्ही चाड पर्वों तथा परम्पराओं में सांगीतिक गतिविधियों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग पाया गया है जैसे ताम्बा गीत, तामाङ सेलो,चाड उत्सव, हवाई गीत, ताम्बा काइतेन गीत, दोहरी गीत, जुहारी गीत इत्यादि।

ताम्बा गीत: ताम्बा गीत में अपने परम्परा के अनुसार अपने से बडे मान्य व्यक्ति, बुजुरगों, मुखिया आदि व्यक्ति में दंडभेट तथा सम्मान पूर्वक अर्पण करने वाले गायन होता है।

तामाङ सेलो: तामाङ सेलो को 'दोहोरी' भी कहते है जो जुहारी के तरहा गया जाता है। एक विशेष मेला पर्व में युवा युवती अपने मन के भाव को व्यक्त करते हुए गाते है। इस गीत को डम्फू(एक प्रकार की अवनद्य वाद्य) और टुंगना(तार वाद्य) के साथ रोमाञ्चक ढंग से गाया जाता है। तामाङ सेलो में से प्रचलित एक गीत की पंत्तियाँ इस प्रकार है:

च्याङ्वा हो च्याङवा सुन सुन हो च्याङवा
दम्फूले आज क्या भन्छ धुम ताक धुम ताक धुम।
मैच्याङ हो मैच्याङ सुन सुन हो मैच्याङ
डम्फूले आज क्या भन्छ जाम् कता जाम् कता जाम्।।

ढुङ्ग्रीमा राम्रो क्या भन्ने नाक मुख राम्रो कान्कोछी
बिन्दुली टीका क्या भन्ने कान्छीको निधार झन् राम्रो।
गुनीउ चोली क्या राम्रो, गुनीउ चोली
कान्छीको जीउ झन् राम्रो, कान्छीको जीउ।
तिमी र हामी मिलेर हिंडे, तिमी र हामी
दुनियाँले देख्दा नि झन् राम्रो,
दुनियाँले देख्दा नि झन् राम्रो।।[2]

इस गाने में लड़का और लड़की एक दूसरे को बुला रहे है। तामाङ जाति में लोकप्रिय वाद्य डम्फू है जिसके सहारे आपस में बात करने का माहोल बनाया है,और एक दूसरे की तारीफ किए जा रहे है।

चाड उत्सव: तामाङ जाति में लामा धर्मी और बौद्ध धर्मी दो प्रकार के होते हैं। इन दोनों धर्मावलम्बियों का धार्मिक स्थल 'गुम्बा' है जहा पूरे वर्ष के धार्मिक रीति परम्पराएं सम्पन्न होती है। इस जाति में बहुत

1. तण्डुकार, सरोजिनी/ बागमती अञ्चलको लोकगीतबारे एक झलक/ p-43
2. तण्डुकार, सरोजिनी/ बागमती अञ्चलको लोकगीतबारे एक झलक/ p-52

सारे पर्व मनाये जाते हैं जैसे जनैपूर्णिमा, दशैं(दशहरा), दीपावली, बुद्ध पुर्णिमा, संसारी पुजा, भूमि पूजा, साउने संक्रान्ति,ल्होसार इत्यादि। इन पर्वों में से ल्होसार पर्व इस जाति का मुख्य पर्व है जो विभिन्न नाच गान के साथ मनाया जाता है।

हवाई गीत: हवाई गीत को विशेष धार्मिक जात्रा, चाडपर्व उत्सव में गया जाता है, जिसमे मानव समाज की सृजन संबन्धित कथाएँ समावेश की जाती हैं।

ताम्बा काइतेन: ताम्बा काइतेन गीत विवाह उत्सव में गाये जाने वाले धार्मिक अर्थपूर्ण लोकगीत है।

दोहोरी गीत: दोहरी युगल गीत है। इस गीत को दोनों स्त्री पुरुष मिलकर गाते है। दोहोरी गीत को कहीं भी गा सकते है चाहे वह मेला पर्वो में हो या कार्य क्षेत्र में हो। इस गीत में प्रेम प्रसंग से लेकर अपने वातावरणों का वर्णन,श्रम कार्यों आदि का वर्णन होता है।

जुहारी गीत: तामाङ जाति में स्त्री पुरुष मिलकर जुहारी गीत गया जाता है। जुहारी गीत प्रतिस्पर्धा के रूप में खेला जाता है, जिसमें विभिन्न शर्तों के साथ खेला जाता है जो दर्शक श्रोताओं को काफी मनोरञ्जनात्मक होता है। तामाङ जाति के सभी गायन तथा नृत्य में अपना मौलिक वाद्य डम्फू और तुङ्ना का समावेश किया जाता है।[1]

इस प्रकार तामाङ जाति की संस्कृति, परम्परा, रीतिरिवाज, लोकगीत तथा नृत्यों की अलग ही पहचान है। आर्थिक स्थिति में ज्यादा बलवान न होते हुए भी अपनी मौलिक संस्कृति को संजोकर रखने में सक्षम मान सकते है।

1.5.1.2 शेर्पा जाती का संगीत

हिमाली प्रदेश में बसोबास करने वाली जतियों में से शेर्पा जाति भी एक प्रमुख जाति है। इस जाति का प्रमुख स्थान उत्तर सगरमाथा सोलुखुम्बु है। इस के अलावा दूधकोशी, हेलम्बु और त्रिशूलि में भी यह जाति बसोबास करते है। शेर्पा शब्द की उत्पत्ति 'स्यार' (पूर्व) और 'पा'(मानव) से हुई है। बाद में इसी शब्द अपभ्रंश होकर शेर्पा प्रचलन में आया ऐसा मानते है। इस जाति की भाषा, संस्कृति और धर्म तिब्बतियों से मिलते जुलते है और लिपि तो तिब्बती ही प्रयोग करते है। परंतु भाषा शेर्पा ही बोली जाती है। इस जाति का मुख्य पेशा कृषि, पशुपालन, व्यापार, और पर्वतारोहण है। पर्वतारोही होने के कारण यह जाति बहुत साहसी और शौर्यवान होते है जो विश्वभर में अपना नाम फैलाने में सक्षम रहे हैं। शेर्पा जाति के रीतिरिवाज़ अन्य जाति से अलग है जो उसी जाति में ही सीमित है। धार्मिक दृष्टि से यह जाति बौद्ध धर्मावलम्बी है।

---

1. तण्डुकार, सरोजिनी/ बागमती अञ्चलको लोकगीतबारे एक झलक/ p-63

जनसंख्या के आधार पर कम होते हुए भी अपना धर्म में अत्यधिक विश्वास होने के कारण इस जाति के समूह ने मिलकर बड़ा बड़ा गुम्बा निर्माण किया है। अपने धार्मिक पर्व यह जाति गुम्बा में ही धूमधाम के साथ मनाते हैं।

शेर्पा जाति में भी जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक विभिन्न संस्कार, परंपरा अपने मौलिक तरीके से मनाया जाता है। इस जाति में जन्म समय से मृत्यु के समय में विधिविधान करने की परम्परा है। इस समय लामा(पुजारी) विभिन्न वाद्य जैसे ध्यालिङ्, शङ्ख, झ्याम्टा, काङ्लिङ, टिलुक, दोछी आदि बजाकर शव को आर्यघाट ले जाते है।[1] इस तरह पूरे वर्ष में विभिन्न त्यौहार पर्व मनाये जाते हैं, जैसे- ल्होसार, दुमजे, मानिरिम्दु, फन्गी इत्यादि। तामाङ जाति की तरह शेर्पा जाति में भी ल्होसार पर्व को ज्यादा मान्यता दी जाती है। शेर्पा जाति में फ़रवरी महीने में नयाँ वर्ष होता है उसी अवसर को विभिन्न खानपान, वाद्यवादन, गायन तथा नृत्य करके हर्षोउल्लास के साथ मनाई जाती है। इस पर्व में गाया जाने वाला एक प्रख्यात गीत इस प्रकार है:

सिम्वा छ्याङ्जी थुङ्दाङ्
ङेम्वी लुजी तुङ्दाङ्।
नम्सी छ्यामा मेतो
ङयाम्सु लुङ्ला तुङदाङ्।[2]

गाने का **भाव अर्थ** है, यह हमारी जिन्दगी दो दिन के है इसलिए मरने से पहले एक मधुर गाना गाकर जाना है।

सेर्पा गीत की रचना ज्यादातर तार सप्तक में वंधा होता है और औड़व स्वरों का प्रयोग किया जाता है। सामाजिक गीतों में वाद्यों का प्रयोग प्राय: नहीं होता है परंतु धार्मिक संस्कार गीत और नृत्यों में ढ्यांग्रो, झ्याली, घण्टा आदि वाद्यों का प्रयोग होता है।[3]

1.5.2 पहाड़ी क्षेत्र की संस्कृति एवं संगीत

हिमाली क्षेत्र के तरहा पहाड़ी क्षेत्र में भी बहुसंख्यक जातियाँ जैसे- बाहुन, क्षेत्री, नेवार, राई, गुरुङ इत्यादि बसोबास करते हैं। आदि, अनादि कालों से रहते आए हुए यहाँ के अनेक जाति तथा जनजातियाँ विभिन्न संस्कृति, परंपरा, रीतिरिवाज से भरपूर हैं। ऐसे ही अपनी अलग पहचान रखने वाली पहाड़ी प्रदेश में

1. तण्डुकार, सरोजिनी/ बागमती अञ्चलको लोकगीतबारे एक झलक/ p-71
2. तण्डुकार, सरोजिनी/ बागमती अञ्चलको लोकगीतबारे एक झलक/ p-72
3. जंगम, दीपक – रावल, बेनी/ संगीत सुरभि/ p- 132

ज्यादातर निवास करने वाले बाहुन(ब्राह्मण) और क्षेत्री जाति है। अन्य जाति के तुलना में इस जाति को उच्च स्थान दिया गया है। इस जाति का मुख्य पेशा पुरोहिताई है। पुरोहिताई के बाद अन्य जाति की तरह मुख्य पेशा खेती ही है। प्राचीन काल से ही इस जाति में शिक्षा की पकड़ अच्छी होने के कारण वर्तमान समय में भी समाज की राजनीतिक नेतृत्व में ज्यादा संख्या इसी जाति के लोगों की है। पहाड़ क्षेत्र में आदिवासी नेवार जाति के साथ-संगत करके रहने वाले यह जाति का मुख्य पेशा पुरोहिताई और खेती होते हुए भी विभिन्न प्रशासनिक कार्यों में, उच्च पधाधिकारी होने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत दिखाई देती है। इस समूदाय में आर्य धर्मग्रन्थ वेद को मानते है। इस जाति का मुख्य धर्म हिन्दू होने के कारण विभिन्न चाडपर्व जैसे शिव पुजा, जनै पुर्णिमा, दशैं(दशहरा), दीपावली, चैत्रदशैं, छठ, होली इत्यादि मनाई जाती है। इस जाति में बौद्ध धर्म को मानने वाले अनुयायि अल्प है।

इस जाति का रहवास पहाड़ी क्षेत्र के अलावा नेपाल के अन्य भूभागों में भी पाया गया है। इस जाति का मुख्य भाषा 'नेपाली' है जो नेपाल की राष्ट्र भाषा है। भेषभूषा में यह जाति दौरा-सुरुवाल, भोटो, तराई क्षेत्र के ब्राह्मण कुर्ता, पैजामा, धोती, दुपट्टा इत्यादि पहनते हैं। नेपाल के ज़्यादातर स्थानों में बसोबास करने वाली इस जाति के विभिन्न तयौहार और स्थान अनुरूप सांगीतिक माहोल, पद्धति अलग अलग होते है। अपनी संस्कृति के साथ गायन, वादन और नृत्य को भी साथ साथ आगे बढ़ाने में सक्षम रहा है। इस जाति में प्रचलित कुछ लोक गीतों का नाम है, जैसे- झ्याउरे, दाइंगीत, भजन चुट्का सङ्गीनी, रोइला, बालन गीत, मंगल गीत, मालश्री, भैलो गीत इत्यादि।

1.5.2.1 झ्याउरे गीत : झ्याउरे गीत लोकगीत प्रकार है। लोकगीत समाज का आएना है। यह राष्ट्र का अमूल्य निधि है, समाज का सम्पत्ति और राष्ट्र का प्राण है। राष्ट्र के अमूल्य सम्पत्ति को बचाए रखने में नेपाल के बाहुन और क्षेत्री जाति का भी बड़ा योगदान है। पूर्व मेची से लेकर पश्चिम महाकाली सिमाना तक झ्याउरे लोक गीत प्रचलित है। यह गीत ताल और छंद से बना हुआ भाका(ट्यून) है। झ्याउरे गीत की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों में विभिन्न मत पाये जाते हैं। 1871 ई. सं के बाद 'गोन्या सिरस' और 'मानवीर खत्री' ने इस लोक गीत को नेपाली भाषा में गाकर झ्याउरे की संज्ञा दिए थे।[(1)] नेपाल एकीकरण के बाद(18 वीं सदी) झ्याउरे गीत सम्पूर्ण नेपाल के अन्य जाति में भी फैलने लगी और इस गायन शैली को अपनाने लगी। इस गीत में दो भाका होती है 'तेर्सो' और 'ठाडो'। तेर्सो भाका को धीमी लय में गायी जाती है और ठाडो भाका को द्रुत लय में गायी जाती है। परंतु कहीं कहीं जगह के हिसाब से लोग ठाडो भाका को धीमी लय और तेर्सो भाका को द्रुत लय में भी गायी जाती है। इस गीत में दोहोही(युगल), जुहारी, एकल गीत और साथ में नृत्य भी करते है। गीत में मुख्य वाद्य मादल का प्रयोग होता है। इस के अलावा बांसुरी,

1. तिवारी (लोहनी), शोभा/ लोकसंङ्गीतार्पण/ p-56

मुर्चुङ्गा, सारङ्गी, आदि भी संगत में बजाये जाते है। झ्याउरे प्राय: 6 और 8 मात्रा ताल में निवद्ध होता है। जगह प्रमाण गाने की शैली अलग होती है। तदनुसार वाद्य वादन में भी बजने की विधि अलग अलग होती है।

1.5.2.2 सङ्गीनी गीत : बाहुन क्षेत्री समाज में अति प्रचलित गीत में से सङ्गीनी गीत भी एक है। यह तीज गीत की तरह महिलाओं का गीत है। इस गीत में महिलाएँ अपने घर गृहस्थी जैसे सास-बहू का झगड़ा, कलह, माइके के याद प्यार, अपने जीवन में घटे हुए दु:ख-सुख की भावनाएँ करुणरस में विलंबित लय में गायी जाती है। इसमें कोई भी वाद्य का प्रयोग नहीं होता है परंतु गीत 6 मात्रा में निबद्ध होता है। इस गीत को महिलाएँ हाथ से ही ताली बजाकर गाते हैं। इस गीत को विशेष चाडपर्व, व्रतबन्ध, पुजा आदि में महिलाएँ पूरे रात अखण्ड दिया जलाकर गायन तथा नृत्य करते है। सङ्गीनी गीत में स्त्री के दु:ख वेदना के साथ साथ हरी मल्ल राजाओं की कथा, सुनकेशरी रानी, कौडे मैंया आदि के गीतिकाव्य विस्तार से गाने का प्रचलन है।[1]

1.5.2.3 देउडा गीत : देउडा गीत नेपाल के सुदूर पश्चिमाञ्चल और मध्य पश्चिमाञ्चल क्षेत्र में प्रचलित लोक गीत है। पश्चिमी पहाड़ के साथ साथ पश्चिमी तराई क्षेत्र में भी गाने की प्रचलन है। यह नृत्य प्रदान गीत है। देउडा को ड्यौडा, ड्यौदा, ड्यौणा, न्याउले गीत, रामखेल, धमाका इत्यादि नाम से भी पुकारा जाता है। डेढ़ कदम उठाकर नृत्य करके गाने के कारण इस गीत को देउडा गीत कहा गया है। इस गीत को एकल तथा समूह में नृत्य के साथ गाया जाता है। इस गीत में केवल गायन होता है, वादन का प्रयोग नहीं होता है। सभी एक दूसरे के हाथ पकड़कर गोलाकार करके कदम पे कदम मिलाकर गाया जाता है। गाने की विषयवस्तु में अपनी इच्छा अनुसार विभिन्न पक्षों का समावेश किया जाता है, जैसे उत्साह, उमङ्ग, प्रेम, विरह, वेदना, पुराण, इतिहास इत्यादि। समुह में गाने के समय जब स्त्री और पुरुष अलग अलग होकर गोलाकार में गाते है तो उसको दोहोरी(युगल) की तरह गाते है। एक दूसरे को प्रश्नोतर करके गाने की परम्परा है। देउदा गीत विभिन्न लय तथा भाका में गाया जाता है। झ्याम्म झ्याम्म, रानी रुमाल, राइजुमा आदि प्रसिद्ध नेपाली देउडा भाका है।[2] विभिन्न जाति के लोग गोलबद्ध होकर मनोरञ्जन उदेश्य से बिना वाद्य गाये जाने वाले ये गीत वर्तमान समय में सभी नेपाली समाज में अत्यन्त लोकप्रिय है। देउडा गीत की प्रचारता का कारण है, इस में प्रयोग होने वाले मनोरञ्जनात्मक संदर्भ, सामाजिक विषयवस्तु, भावगत विविधता, स्थानीय लोकभाका का प्रयोग, अंतरा और थेगो की बाहुलता, श्रुति मधुर मध्य लय का प्रयोग,

1. तण्डुकार, सरोजिनी/ बागमती अञ्चलको लोकगीतबारे एक झलक/ p-101
2. श्रेष्ठ, तुलसीमान/ नेपाली लोकगीत परिचय र विश्लेषण/ p-126

वर्णनात्मक शैली का प्रयोग और संरचनात्मक स्वतन्त्रता उनकी विशेषता है जो श्रोता तथा दर्शकों को लुभान्वित करने में सक्षम है।

1.5.3 तराई क्षेत्र की संस्कृति एवं संगीत

हिमाल तथा पहाड़ क्षेत्र के तरह नेपाल का तीसरा प्रदेश तराई क्षेत्र भी अपना अलग ही विशेषताओं से भरपूर है। प्रकृतिक सौंदर्य से लेकर मानव बस्तियों की विभिधता, रहन सहन का ढ़ाचा, भाषा एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का तरीका, दैनिक आचरण इत्यादि में विभिधता पायी जाती है। तराई क्षेत्र, पहाड़ी प्रदेश और छिमेकी राष्ट्र भारत के बीच में होने के कारण यहाँ की सांस्कृतिक एवं सांगीतिक गतिविधि में उन स्थानों का प्रभाव दिखाई देता है। इस स्थान में रहवास करने वाली जातियाँ भी मिश्रित देखने को मिलता है। तराई क्षेत्र में मुख्य रूप में रहवास करने वाले जाति जैसे- धीमाल, थारु, यादव, राजवंशी, कुशवाहा, तेली, कुर्मी, सुडी इत्यादि में से कुछ मुख्य जतियों में प्रचलित सांस्कृतिक एवं सांगीतिक भूमिका की चर्चा करेंगे। जैसे-

1.5.3.1 धीमाल गीत : धीमाल नेपाल के पूर्वी स्थान कोशी अञ्चल और मेची अञ्चल में मुख्य रूप से झापा जिला के अधिकांश स्थानों में बसोबास करने वाले जाति है। इन्हीं जाति द्वारा गाया जाने वाला गीत को धीमाल गीत कहते है। यह जाति पिछड़ा हुआ आदिवासी है। इस जाति की संस्कृति और भाषा अन्य जाति राई और लिम्बु से ज्यादातर मिलती जुलती है। संख्या में अत्यन्त कम होते हुए भी अन्य जाति के तरह अपना अलग सा पहचान और सांगीतिक गतिविधियां प्रचलन में है। इस जाति के मुख्य पेशा कृषि और पशुपालन है। मुख्य बात यह है कि यह जाति अपने पहनने के कपड़े खुद ही तयार करते है। किंवदन्ती अनुसार प्राचीन काल में किरात लोग तराई क्षेत्र के जंगल में शिकार खेलने गए थे। जाते जाते रात हो गई और अपना रास्ता भूल गए। रास्ता भटक ने से वह लोग उसी स्थान में रहने लगे। इस तरह 'ढिला किरात' के रूप में बाद में धीमाल कहने लगे।[(1)] प्रचलन में ढिला जाति बोला जाता है, फिर भी इस जाति में विभिन्न मेला पर्वों में स्त्री पुरुष दोनों मिलकर धूमधाम से गाकर साथ में नृत्य करते हैं। धीमाल गीत प्राय 6 और 8 मात्रा में निबद्ध पाया जाता है। धिमाल गीत में सेरेन्जा, च्याप्ब्रुङ्ग, डिंगा(ढ़ोल), मानर(एक प्रकार का मादल), उर्नी, दोदरा आदि वाद्यों को बजाया जाता है। नेपाल के छोटे से स्थानों में बसोबास करते हुए भी अपना विशेष एवं अलग पहचान बनाने में सफल जाति है। धीमाल जाति में अत्यन्त प्रचलित 8 मात्र में निबद्ध गीत इस प्रकार है जो भातखण्डे स्वरलिपि के अनुसार निबद्ध किया गया है :

1. तिवारी (लोहनी), शोभा/ लोकसंङ्गीतार्पण/ p-68

धिमाल गीत (8 मात्रा)

चेचेका मेमेका घिंसी गोरा
चमासुरे बाजेलाइ रसी गोरा
दमा दमा रोइका रोइका बबुरे
चमासुरे बाजेलाई जोर हंसुला
साल्व साय् सो सो सो ।

गीत का स्वरलिपि

पप- मरे- ।मम- रेसा- ।मग- सासा- । सा-- ---।

चेचे- का-- ।मेमे- का-- । घिंसी- गो -- ।रा-- ---।

चमा- सुरे- ।बाजे- लाई- ।रसि- गो-- ।रा-- ---।

दमा- दमा-।रोइ- का-- ।रोइका- बबु- ।रे-- --- ।

चमा- सुरे- ।बाजे- लाई- ।जोर- हँसु- ।ला-- ---।

पप- निनि- ।सा-- --- ।सा-- --- ।सा-- --- ।

साल्व साय-।सो-- --- । सो-- --- ।सो-- ---।[1]

1.5.3.2 मैथिली गीत : नेपाल का अन्य जाति के लोक गीतों के तरह मैथिली गीत भी एक प्रचलित लोक गीत प्रकार है। इस गीत को नेपाल के मैथिली भाषियों द्वारा गाया जाता है। इस भाषियों का मुख्य स्थान मिथिला के राजधानी(जनकपुर अञ्चल), कोशी तथा नारायणी अञ्चल है। इस क्षेत्र की संस्कृति एवं सांगीतिक विकासक्रम का अपना अलग ही इतिहास रहा है। आदिकवि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण जो उन्नीस सौ वर्ष ई. पू माना गया है, उस काव्य में नेपाल के मिथिलाञ्चल जनकपुर राज्य का उल्लेख किया है। इसी नगर में महाराजा जनक की पुत्री सीता का जन्म हुआ था। राजा जनक एवं जानकी के कारण इस काव्य में नेपाल के संस्कृति एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी पर्याप्त मात्रा में मिलती है। "इसी तरह मिथिलाञ्चल क्षेत्र में कर्णाटवंशीय राजा नान्यदेव(1097-1133 ई. सं) को गीत-संगीत की विकास के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान माना जाता है। उन्होंने "सरस्वती हृदय अलंकार हार" करके एक संगीत ग्रंथ

1. तिवारी (लोहनी), शोभा/ लोकसंङ्गीतार्पण/ p-69

लिखा था।"[1] इस प्रकार हम देख सकते हैं कि मिथिला नगर में लोकसंगीत का वास दीर्घ काल से हुआ है।

मैथिली लोक गीत को ज्यादातर पुरुषों से ज्यादा स्त्रीयों के आवाज में सुनने को मिलता है। भिन्न भिन्न प्रकार के मैथिली गीतों को अलग अलग त्यौहार, पर्वो, समय अनुरूप गया जाता है, जैसे- धार्मिक गीत(गोसाउनिक गीत, नचारी, कीर्तन), संस्कार गीत, ऋतुगीत (फागु, वसंत, पावस, झूला), बारहमासा, सामयिक गीत(छठ, गोदना, जट-जटिन, समाचकेवा), शिशुगीत, गाथा गीत(सलहेस, दिनाभद्री) इत्यादि। धार्मिक गीत के अंतरगत गोसाउनिक गीत, नचारी और कीर्तन गया जाता है। गोसाउनिक गीत कोई भी शुभकार्य प्रारम्भ करते समय देवी की वंदना करते हुए गया जाता है। नचारी गीत भगवान शिव की लीलाओं के वर्णन गीत है। कीर्तन गीत में विशेष आराध्यदेव मर्यादा पुरुषोतम राम और माता सीता के वर्णन भजन गये जाते है। वर्तमान समय में भी इस प्रकार के कीर्तन जगह जगह, मंदिरों तथा घरों में गाने की प्रथा कायम है। उसी प्रकार संस्कार गीत में विविध संस्कार जैसे- शिशु का जन्म गीत, मुंडन, उपनयन, विवाह, मातृका पजन, गौरीपुजा, इत्यादि अवसर में उसी प्रकार की शब्द संरचनाएं गाने की परम्परा है। वर्ष के चार ऋतु में अलग अलग गायन करते है जैसे-फागु, वसन्त, पावस और झूला। सामाजिक गीत के अन्तर्गत छठ, गोदना, जट-जटिन, समाचकेवा इत्यादि आता है। इन गीतों में स्त्री विषयक शब्दावलियों का प्राधान्य होता है। मैथिली गीतों में गायन के साथ-साथ वाद्य को भी उतना ही महत्व दिया गया है। प्राय: सभी गीतों में भिन्न भिन्न प्रकार के वाद्य जैसे- झाल, ढोलक, पिपही, सींधा, डमरू घारी, घण्टा, शंख, डंका, नगाड़ा इत्यादि प्रयोग किया जाता है।[2] इस प्रकार मैथिली लोकगीत भाषिक दृष्टिकोण के साथ साथ गेयात्मक दृष्टिकोण से भी समृद्ध है जो नेपाली लोक-संगीत के भण्डार को भरने में मदद मिलती है।

इस प्रकार शोधार्थिनी द्वारा प्रथम अध्याय में नेपाल शब्द की उत्पत्ति, अलग अलग प्रदेशों की भौगोलिक स्थिति से लेकर विभिन्न काल जैसे प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक काल में हो चुकी शासन प्रणाली, शासन समय, अलग अलग शासकों के समय में परिवर्तित संगीत के विकास एवं वर्तमान स्वरूप इत्यादि की चर्चा की गई है। साथ ही साथ नेपाल के तीनों प्रदेशों की मुख्य जतियों की संस्कृति एवं सांगीतिक गतिविधियों को जानने का प्रयास किया गया है।

---

1. कापडि भ्रमर, रामभरोस/ मैथिल लोकसंस्कृति विविध आयाम/ प-66
2. जंगम, दीपक – रावल, बेनी/ संगीत सुरभि/ p- 132